जीवन एवं मृत्यु का रहस्य

इस संसार में आज तक जो भी प्राणी आया है उसकी मृत्यु निश्चित है। मृत्यु होने पर मनुष्य कहां जाता है? आत्मा का अस्तित्व है या नहीं ? इन प्रश्नों का अभी तक संतोषजनक उत्तर नहीं मिल सका है। भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में अर्जुन को उपदेश दिया था कि आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। जीव भाव का क्रम विकास होता है एवं मृत्यु क्रम विकास की ही प्रतिछवि है। जीवित अवस्था में हमारी शक्तियां इन्द्रियों में बिखरी रहती हैं। मृत्यु के समय आत्मा इन्द्रियों में बिखरी शक्ति को अपने अन्दर खींच लेती है उसको प्राणकेन्द्र कहा जाता है । हमारी समस्त इन्द्रिय शक्ति, स्मृतिशक्ति, एवं अनेक शक्तियां प्राण में निवास करती हैं। मृत्यु होने पर चेतना शक्ति को मालूम नहीं पड़ता कि उसका अब शरीर से कोई सम्बन्ध नही है। उसकी आत्मा को बहुत दुःख होता है कि जिस शरीर को वह स्वस्थ रखने के लिये अच्छा खाना खाता था, जिसको वह अपना समझता था, जिस धन दौलत को कमाने के लिए उसने कितना कठिन परिश्रम किया वह भी उसके साथ नही जा रहा है। प्रत्येक धर्म में यही कहा जाता है कि मृतक शरीर के पास रोना नही चाहिए क्योकि उसकी आत्मा को कष्ट होता है।

आजकल वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि मृत्यु के पश्चात आदमी के शरीर का वजन जीवित अवस्था की अपेक्षा 1/2 से 1/4 औंस कम हो जाता है। मृत्यु के समय शरीर से प्रकाश निकलता है जो कुछ क्षण मृतक शरीर के चारों ओर रहता है। इस प्रकाश का आकार निश्चित नहीं रहता है। आज के वैज्ञानिकों ने शक्तिशाली लैंस के कैमरे के द्वारा उसके छाया चित्र उतारे हैं। वैज्ञानिकों ने उस प्रकाश को अपनी भाषा में 'एक्टोप्लाजम' कहा है। 'एक्टोप्लाज्म' सूक्ष्म जड़ कणों द्वारा शाश्वत आत्मा एवं जड़ शरीर के वाहय आवरण की रचना करता है। जीवित मनुष्य में प्राण शक्ति समस्त इन्द्रियों को नियन्त्रण करती है। मृत्यु के पश्चात वह एक केन्द्र पर एकत्रित हो जाती है।

ऐसा देखा गया है कि मरते समय मनुष्य की यादगार एवं देखने की शक्ति कम होती जाती है । क्योकि प्राण जो कि एक प्राकृतिक शक्ति है एक साथ नही निकलती है। यदि कोई मनुष्य मरते मनुष्य के पास हो तो देख सकता है कि कुछ क्षण के लिये ऐसा मालूम पड़ेगा कि वह अब ठीक हो रहा है, जिस प्रकार बुझते दीपक की लौ बढ़ जाती है। किसी - किसी में मरते समय उसकी आन्तरिक शक्ति इतनी तीव्र हो जाती है कि वह भविष्य में होने वाली घटनाओं को बता देता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि किसी पदार्थ का नाश नही होता केवल उसका अवस्था परिवर्तन होता है। अतः जन्म मृत्यु भी एक अवस्था का परिवर्तन मात्र है। जीवात्मा की कभी मृत्यु नही होती। इस शरीर की कोई सत्ता नहीं है क्योकि प्रत्येक समय उसका परिवर्तन हो रहा है। शेशव से किशोर, किशोर से युवा, युवा से प्रौढ तथा प्रौढ़ से जरा हो रही है। इसी प्रकार इस शरीर का भी रुपान्तर हो रहा है।

आज के विज्ञान ने प्रमाणित किया है कि एक बच्चे के गुण की काफी समानतायें उसके अपने माता पिता से मिलती हैं। वैज्ञानिकों ने उनको आनुवंशिकता (Heredity) कहा है। मै इसी को पुनर्जन्म का उल्लेख करके कहना चाहता हूं कि कर्म नीति द्वारा हमारा पुनः जन्म एवं मृत्यु नियंत्रित है। हमारा विश्वास है कि माता पिता हमारी आत्मा का निर्माण कभी नही कर सकते हैं। वे तो मात्र माध्यम हैं। जब आत्मा दूसरा शरीर धारण करती है तब वह अपने पूर्व शरीर द्वारा किये गये कर्मो के अनुसार, जो कि संस्कार कहलाता है, अपने पुनः जन्म के लिए एक माध्यम का चुनाव करती है। उस माध्यम के गुण भी उस संस्कार से मिलते जुलते हैं। हमारे वैज्ञानिक पुनः जन्मे संस्कार को ही आनुवंशिकता (Heredity) कहते हैं। यदि मनुष्य चाहे तो वह अपने वास्तविक जीवन के रहस्य को जान सकता है उसके लिए उसे वाणी एवं मन को एक कर नियमित योगाभ्यास द्वारा एकाग्रचित होना होगा। आत्म तत्व को जानना जन्म मृत्यु का रहस्य है। जन्म से लेकर मृत्यु के पूर्व तक आत्म सत्ता को जानना ही मुक्ति पथ है।

आत्म प्रकाश, "शोध सहायक, गंगा मैदानी क्षेत्रीय केन्द्र, पटना"